By :- Sweta Kumari
Dept. of History

मथुरा कला शैली (Mathura School of Art)

कुषाण शासक कनिष्क, हुविष्क तथा वासुदेव के काल में मथुरा कला का सर्वोत्कृष्ट विकास हुआ। मथुरा शैली का आरम्भ ए. एल. बाशम के अनुसार सम्भवतः ई. पू. प्रथम शताब्दी के अंत में हुआ। यद्यपि कुछ विद्वान इसकी तिथि और बाद में निर्धारित करते हैं। ईसा की पहली सदी से प्रारम्भ करते हुए इस शैली ने आने वाले समय में उत्तर भारत की मूर्ति कला की शैलियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। गुप्त काल में विकसित श्रेष्ठ मूर्तिकला शैली को वस्तुतः मथुरा कला शैली का ही विकसित स्वरूप माना जाता है। मथुरा शैली में निर्मित मूर्तियाँ पश्चिम में तक्षशिला और मध्य एशिया तक तथा पूर्व में श्रावस्ती और सारनाथ तक भेजी जाती थी।

आरम्भ में यह माना जाता था कि मथुरा शैली का विकास गान्धार की बौद्ध मूर्तियों के प्रभाव एवं अनुकरण से ही हुआ था परन्तु शोधों द्वारा अब यह निश्चित रूप से सिद्ध हो चुका है कि मथुरा की मथुरा की बौद्ध मूर्तियाँ गान्धार कला से सर्वथा भिन्न एवं स्वतंत्र थी तथा उनका आधार मूलरूप से भारतीय ही था। आरम्भ में अनेक यूरोपीय विद्वानों का मानना था कि सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्ति गान्धार कला में ही निर्मित हुई परन्तु अब भारतीय विद्वानों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बुद्ध की मूर्ति सर्वप्रथम मथुरा कला में ही बनी।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि ई. पू. प्रथम शताब्दी में मथुरा भक्ति आन्दोलन का केन्द्र बन गया था। संकर्षण, वासुदेव कृष्ण, बलराम आदि की प्रतिमाओं के साथ-साथ उस समय जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं का भी निर्माण हो चुका था। इतना ही नहीं, मथुरा में लोक कला के तहत यक्ष-यक्षणी की भी विशाल प्रतिमाएं निर्मित हुईं। इनका प्रभाव निश्चित रूप से बौद्ध-धर्म पर भी पड़ा होगा

कनिष्क के काल में चतुर्थ बौद्ध संगीति के उपरान्त जब
महायान सम्प्रदाय हुआ तो इसमें बुद्ध की मूर्ति रूप में पूजा
किये जाने का विधान था और मथुरा में नाग एवं जैन आदि
मूर्तियों को देखते हुए बौद्धों को भी बुद्ध का मानव रूप
देखने की आवश्यकता प्रतीत हुई होगी और इस प्रकार सम्भवतः
मथुरा कला के अन्तर्गत ही पहले बोधिसत्व और बाद
में प्रथम बार बुद्ध की मूर्ति निर्मित की गई होगी। मथुरा और
गान्धार शैली में एक अंतर यह भी है कि मथुरा से कुछ ऐसी बौद्ध
प्रतिमा मिली है जिनपर कनिष्क शासन की प्रारम्भिक तिथियों
में लेख खुदे हैं। इसके विपरीत गान्धार कला की मूर्तियाँ
कोई एक पर भी कोई परिचित शासन नहीं है और कुछ मूर्तियों
पर जो लिपियाँ दी गई हैं वे पहली से तीसरी सदी ई० की हैं
अतः इस दृष्टि से मथुरा की बौद्ध प्रतिमाएं प्राचीनतम सिद्ध
होती है। कुछ विद्वानों के अनुसार गान्धार कला में पद्मासन
ध्यान नासाग्रदृष्टि आदि प्रतीकात्मक लक्षण मथुरा के शिल्पियों
से ही ग्रहण किये होंगे क्योंकि इन प्रतीकात्मक लक्षणों का
स्रोत भारत ही था न कि ईरान अथवा यूनान।

मथुरा कला की विशेषता का प्रधान कारण यह
था कि यहाँ के कलाकारों ने मूर्तियों के निर्माण में पिछली
परम्पराओं को अपनाया। वस्तुतः मथुरा कला का उदय सांची,
सारनाथ और भरहुत की स्वदेशी कला के सूत्र को
लेकर हुआ। ।

मथुरा कला शैली में निर्मित मूर्तियों की प्रमुख
विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. मथुरा के पड़ोस में रूपवास तथा अन्य खानों में
बहुत बढ़िया लाल चकत्ता पत्थर बहुतायत मिलता था।